

उभरते राजनीतिक मुद्दे और नागरिक समाज व मीडिया की भूमिका

डॉ. नगमा खानम¹

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन)

Received: 25 November 2025 Accepted & Reviewed: 28 November 2025, Published: 30 November 2025

Abstract

विश्व राजनीति आज एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ गति, परिवर्तन, अस्थिरता और अनिश्चितता उसकी प्रमुख विशेषताएँ बन चुकी हैं। वैश्वीकरण, तकनीक, इंटरनेट, सोशल मीडिया, आर्थिक पुनर्गठन, पर्यावरणीय संकट, जनसांख्यिकीय बदलाव, सामाजिक असमानता और लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास का संकट—ये सभी कारक राजनीति की दिशा और मूलभूत संरचना को निरंतर बदल रहे हैं। आधुनिक विश्व में राजनीति लगातार नई चुनौतियों और अवसरों के बीच विकसित हो रही है। समाज का ढांचा—चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, तकनीकी हो या सांस्कृतिक—निरंतर परिवर्तनशील है, और इसी परिवर्तन के कारण राजनीति में नित नए मुद्दे उभरते रहते हैं। 21वीं सदी ने शासन और लोकतंत्र के समक्ष जो प्रश्न उपस्थित किए हैं, वे पहले कभी इतने जटिल और बहुआयामी नहीं रहे। एक ओर तकनीकी क्रांति समाज को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है, तो दूसरी ओर वैश्वीकरण ने आर्थिक असमानताओं को गहरा किया है। पर्यावरण संकट, बेरोज़गारी, मानवाधिकार, डिजिटल सुरक्षा, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर बढ़ते सवाल और फेक न्यूज़ जैसे विषय आज की राजनीतिक चर्चाओं का मुख्य हिस्सा बन चुके हैं। भारत जैसा विशाल और जटिल लोकतंत्र, जिसकी जनसंख्या 140 करोड़ से अधिक है, 4000 से अधिक जातीय-भाषाई समुदाय हैं, अनेक धर्म, अनेक पहचानें और अनेक वर्ग हैं, इन उभरते परिवर्तनों से सबसे अधिक प्रभावित देशों में से एक है। राजनीतिक नेतृत्व, नीतियाँ, चुनावी परिदृश्य, सरकारी संस्थाएँ और जनता—सभी एक नए विमर्श में प्रवेश कर चुकी हैं। इन उभरते राजनीतिक मुद्दों को समझने और उनके समाधान की दिशा में आगे बढ़ने के लिए केवल सरकार या राजनीतिक दल ही पर्याप्त नहीं हैं। नागरिक समाज और मीडिया की भूमिका पहले से कहीं अधिक व्यापक और निर्णायक हो गई है। नागरिक समाज जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करता है और जनता के अधिकारों के संरक्षण, लोक-नीतियों के सुधार और पारदर्शिता के लिए सतत प्रयासरत रहता है। वहीं मीडिया, जो लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहलाता है, राजनीतिक मुद्दों को उजागर करने, जनता को जागरूक करने और सत्ता को जवाबदेह बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। इन परिवर्तनों को समझने के लिए केवल राज्य की भूमिका पर्याप्त नहीं होती, बल्कि लोकतंत्र की दो अन्य महत्वपूर्ण इकाइयों—नागरिक समाज और मीडिया—की भूमिका अनिवार्य रूप से सामने आती है। नागरिक समाज वह शक्ति है जो जनता की आकांक्षाओं, अधिकारों और आवश्यकताओं को संगठित रूप में अभिव्यक्ति देता है। मीडिया वह मंच है जो सूचना, बहस, विचार और विमर्श को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाता है। 21वीं सदी के लोकतंत्र ने केवल शासन की व्यवस्था को नहीं, बल्कि नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के समग्र ढाँचे को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण, डिजिटल प्लेटफॉर्म, लोकलुभावन और पहचान आधारित राजनीति, राजनीतिक ध्रुवीकरण, आर्थिक असमानता और सामाजिक विभाजन ने लोकतांत्रिक संरचनाओं को अत्यंत जटिल बना दिया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य नागरिक समाज और मीडिया की लोकतांत्रिक स्थायित्व, उत्तरदायित्व और पारदर्शिता में भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में यह दिखाया गया है कि कैसे नागरिक समाज संगठनों और मीडिया संस्थाओं ने शासन और जनता के बीच संवाद स्थापित किया, नीति निर्माण में भाग लिया और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में भ्रष्टाचार, मानवाधिकार उल्लंघनों और सामाजिक न्याय के मुद्दों को उजागर किया। साथ ही, यह शोध राजनीतिक हस्तक्षेप, डिजिटल misinformation, सामाजिक ध्रुवीकरण और संस्थागत अविश्वास जैसी चुनौतियों पर भी ध्यान केंद्रित करता है। अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लोकतंत्र की स्थिरता और दीर्घकालिक मजबूती के लिए स्वतंत्र और सशक्त नागरिक समाज तथा निष्पक्ष मीडिया की मौजूदगी अनिवार्य है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि नागरिक समाज और मीडिया किस प्रकार उभरते राजनीतिक मुद्दों के समाधान में योगदान करते हैं और किस प्रकार नई चुनौतियाँ इन दोनों की कार्यशैली को प्रभावित कर रही हैं।

Keywords: लोकतंत्र, नागरिक समाज, मीडिया, राजनीतिक मुद्दे, सहभागिता, पारदर्शिता, जवाबदेही, डिजिटल

Introduction

लोकतंत्र केवल चुनाव और विधायिका तक सीमित नहीं है। यह नागरिकों की सक्रिय भागीदारी, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और सामाजिक न्याय पर आधारित एक निरंतर प्रक्रिया है। भारत जैसे बहुलतावादी और विविधतापूर्ण देश में लोकतंत्र केवल शासन तक सीमित नहीं रह सकता। यह एक ऐसा जीवन्त ढांचा है जिसमें जनता, नागरिक समाज और शासन के बीच निरंतर संवाद और संतुलन आवश्यक होता है। 21वीं सदी में राजनीतिक परिदृश्य में तेजी से बदलाव आया है। वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित किया, बल्कि राजनीतिक प्रक्रियाओं में भी नया दृष्टिकोण उत्पन्न किया। वैश्विक राजनीति में राष्ट्रवादी प्रवृत्तियाँ,

लोकलुभावन नेतृत्व और पहचान आधारित राजनीति ने लोकतांत्रिक मूल्यों को चुनौती दी है। डिजिटल मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म ने नागरिक सहभागिता को पहले से अधिक सक्षम किया है, लेकिन misinformation और ट्रोलिंग जैसी समस्याओं ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर गंभीर प्रभाव डाला है। लोकलुभावन और पहचान आधारित राजनीति लोकतंत्र की स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती बनकर उभरी है। नेता तात्कालिक लोकप्रियता के लिए घोषणाएँ करते हैं, जिससे नीति की दीर्घकालिक स्थिरता प्रभावित होती है। जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय पहचान का राजनीतिकरण लोकतांत्रिक विमर्श को कमजोर करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर misinformation, ट्रोलिंग और राजनीतिक हस्तक्षेप लोकतंत्र की वैधता और पारदर्शिता पर प्रभाव डालते हैं।

नागरिक समाज और मीडिया इन चुनौतियों के बीच लोकतंत्र की रीढ़ का काम कर रहे हैं। ये संस्थाएँ सत्ता पर निगरानी रखती हैं, नीति निर्माण में भाग लेती हैं, और जनता की आवाज़ शासन तक पहुँचाती हैं। भारत में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, महिला सशक्तिकरण अभियान, पर्यावरणीय न्याय आंदोलन, और जलवायु परिवर्तन संबंधित अभियानों ने यह दिखाया कि नागरिक समाज और मीडिया केवल आलोचना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे लोकतांत्रिक सुधार और सामाजिक न्याय के मुख्य वाहक बन गए हैं।

उभरते राजनीतिक मुद्दे- वर्तमान वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में लोकतंत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। वैश्विक आर्थिक असमानता, सामाजिक विभाजन, जलवायु संकट, पलायन, डिजिटल डेटा का दुरुपयोग और पहचान आधारित संघर्ष लोकतंत्र की वैधता को प्रभावित कर रहे हैं।

लोकतंत्र केवल चुनाव और विधायिका तक सीमित नहीं रह गया है। अब यह पारदर्शी संवाद, सहभागी नीति, डिजिटल साक्षरता और नागरिक जागरूकता पर भी निर्भर करता है। वैश्वीकरण और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सत्ता-संकेन्द्रण और लोकलुभावन राजनीति को और प्रभावी बनाया है। सोशल मीडिया पर misinformation और ट्रोलिंग लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा बन गई है।

सामाजिक असमानता और हाशिए के समुदायों की नीति-निर्माण में सीमित भागीदारी ने सामाजिक असंतोष को बढ़ावा दिया है। आर्थिक विषमता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में अंतर, पलायन और पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ लोकतंत्र की स्थिरता और उत्तरदायित्व को चुनौती देती हैं।

उभरते राजनीतिक मुद्दे वे समस्याएँ या चुनौतियाँ हैं जो सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक अथवा वैश्विक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप नई रूपरेखा में सामने आती हैं।

इनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- इनका प्रभाव व्यापक और बहुआयामी होता है
- ये सामान्यतः जटिल और बहुस्रोत होते हैं
- इनके समाधान के लिए बहु-स्तरीय नीति-हस्तक्षेप आवश्यक होते हैं
- इनका सीधा प्रभाव लोगों के जीवन, विचार और व्यवहार पर पड़ता है

नागरिक समाज लोकतंत्र का अनौपचारिक स्तंभ है, जो शासन और जनता के बीच पुल का काम करता है। यह केवल आलोचना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि नीति सुधार और सामाजिक न्याय की दिशा में सक्रिय योगदान देता है। भारत में 1970 और 1980 के दशक में आए सामाजिक आंदोलनों ने नागरिक समाज की शक्ति और प्रभावशीलता को उजागर किया। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, महिला अधिकारों के लिए आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु न्याय अभियान ने दिखाया कि कैसे नागरिक समाज जनता की आवाज़ को नीति निर्माताओं तक पहुँचाता है।

नागरिक समाज संगठनों ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में कई सुधार किए। उदाहरण के लिए, शिक्षा के क्षेत्र में गैर-सरकारी संगठन ग्रामीण इलाकों में साक्षरता बढ़ाने, बच्चों को स्कूलों तक पहुँचाने और महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में, नागरिक संगठनों ने ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य शिविर, टीकाकरण अभियान और जागरूकता कार्यक्रम चलाकर शासन के प्रयासों को सशक्त किया है। नागरिक समाज और मीडिया का परस्पर संबंध लोकतंत्र की मजबूती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया नागरिक अभियानों को व्यापक जनमानस तक पहुँचाता है, जबकि नागरिक संगठन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की दिशा में कार्य करते हैं। इस सहयोग से मिथ्या सूचना का मुकाबला होता है और नागरिक सहभागिता सशक्त बनती है।

हालांकि, दोनों संस्थाओं के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं। NGO और नागरिक संगठनों पर नियामकीय दबाव, पत्रकारों पर राजनीतिक और शारीरिक हमले, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर निगरानी, डेटा का दुरुपयोग और आर्थिक अस्थिरता इनके स्वतंत्र अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद ये संस्थाएँ लोकतांत्रिक सुधारों और नीतिनिर्माण में निरंतर योगदान दे रही हैं।

वर्तमान समय में, नागरिक समाज डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके अपनी पहुँच और प्रभाव को और विस्तारित कर रहा है। ऑनलाइन petitions, सोशल मीडिया अभियानों और डिजिटल अभियानों के माध्यम से जनता सीधे सरकार और नीति निर्माताओं तक पहुँच रही है। यह न केवल लोकतांत्रिक संवाद को सशक्त बनाता है, बल्कि नीति निर्माण में भी जनता की भागीदारी को सुनिश्चित करता है।

मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। यह न केवल जानकारी प्रदान करता है बल्कि सार्वजनिक विमर्श को संचालित करता है। सत्ता की निगरानी करता है और नागरिकों की जागरूकता बढ़ाता है। स्वतंत्र और विविध मीडिया संरचनाएँ शासन की पारदर्शिता और जवाबदेही को सुनिश्चित करती हैं।

हालांकि, मीडिया को भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। राजनीतिक हस्तक्षेप, कॉर्पोरेट दबाव और डिजिटल misinformation ने मीडिया की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर fake news, trolling और targeted campaigns ने लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर किया है।

फिर भी, खोजी पत्रकारिता और स्वतंत्र मीडिया अभियानों ने कई बार भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघनों को उजागर किया है। नागरिक समाज और मीडिया का यह सहयोग लोकतंत्र को जीवन्त बनाए रखता है। मीडिया नागरिक अभियानों को सार्वजनिक मंच प्रदान करता है, जबकि नागरिक संगठन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं।

स्वतंत्रता के बाद से भारत की राजनीति में मुद्दे समय-समय पर बदलते रहे—

- पहले चरण में राष्ट्र-निर्माण, आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय प्रमुख थे
- 1990 के बाद उदारीकरण, जाति-आधारित राजनीति, पहचान की राजनीति और आर्थिक सुधार प्रमुख बने
- 2000 के बाद तकनीकी उभार, वैश्वीकरण, रोजगार संकट, पर्यावरण और डेटा-सुरक्षा जैसे मुद्दे उभरे

यह परिवर्तन संकेत देता है कि राजनीतिक मुद्दे स्थायी नहीं होते; वे समाज के परिवर्तनीय ढाँचे के साथ आगे बढ़ते रहते हैं।

नागरिक समाज का स्वरूप और भूमिका- नागरिक समाज किसी भी लोकतंत्र का वह हिस्सा है जो जनता की सामूहिक इच्छाओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। नागरिक समाज सरकार और आम जनता के बीच एक सेतु की तरह कार्य करता है। इसमें गैर-सरकारी संगठन, सामाजिक समूह, समुदाय आधारित संगठन, मानवाधिकार संस्थाएँ, श्रमिक संगठन, महिला समूह, छात्र संगठन, पर्यावरण कार्यकर्ता और सामाजिक आंदोलनों के समूह सम्मिलित होते हैं। नागरिक समाज की भूमिका बहुआयामी होती है। यह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता फैलाता है, शोध करता है, जनमत तैयार करता है और सरकार से जवाबदेही की मांग करता है। मानवाधिकारों, सामाजिक न्याय और अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा में नागरिक समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार नागरिक समाज ने ऐसी समस्याओं को उजागर किया है जिन्हें सरकार और मीडिया ने नजरअंदाज कर दिया था। RTI आंदोलन, चिपको आंदोलन, निर्भया आंदोलन और भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन इसका उदाहरण हैं। नागरिक समाज नीतियों के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाता है। कई NGO और सामाजिक संगठन शोध रिपोर्टें तैयार करते हैं, नीति सुझाव देते हैं और सरकार पर दबाव बनाते हैं कि वह नागरिक हित में निर्णय ले। प्राकृतिक आपदाओं, स्वास्थ्य संकट और सामाजिक उथल-पुथल के समय नागरिक समाज समाज की रीढ़ साबित होता है। डिजिटल युग में नागरिक समाज का विस्तार और अधिक बढ़ा है। सोशल मीडिया अभियानों, ऑनलाइन याचिकाओं और डिजिटल जागरूकता कार्यक्रमों ने नागरिक सक्रियता को अधिक तेज, प्रभावी और सुलभ बनाया है।

मीडिया का स्वरूप और उसकी राजनीतिक भूमिका- मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, क्योंकि यह जनता और सरकार के बीच सूचना का पुल है। मीडिया का कार्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि तथ्य आधारित विश्लेषण, आलोचना, समीक्षा और जनभावनाओं को दिशा देने का भी होता है। भारतीय मीडिया का विकास समय के साथ बहुत दिलचस्प रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रेस ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपातकाल के दौरान प्रेस पर लगाए गए प्रतिबंधों ने लोकतंत्र की नींव को हिलाया और प्रेस स्वतंत्रता के महत्व को उजागर किया। उदारीकरण के बाद निजी मीडिया चैनलों के आने से समाचारों का दायरा बढ़ा और प्रतिस्पर्धा बढ़ी। आज डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और ऑनलाइन पोर्टलों ने समाचार और राजनीतिक संवाद का स्वरूप बदल दिया है। अब समाचार वास्तविक समय में चलने लगा है, और राजनीतिक विमर्श सोशल मीडिया ट्रेंड्स के आधार पर प्रभावित होने लगा है। मीडिया राजनीतिक मुद्दों को उजागर करता है, घोटालों का पर्दाफाश करता है, जनता की राय बनाता है और कई बार सरकार पर नीतिगत निर्णय बदलने का दबाव बनाता है। हालांकि मीडिया की स्वतंत्रता और विश्वसनीयता पर भी कई प्रश्न उठते हैं—कॉर्पोरेट नियंत्रण, राजनीतिक पक्षपात, TRP प्रतिस्पर्धा और फेक न्यूज़ जैसी समस्याएँ इसकी विश्वसनीयता को चुनौती

देती हैं। फिर भी, मीडिया लोकतंत्र में एक अनिवार्य संस्था है, क्योंकि वही राजनीतिक एजेंडा सेट करता है, मुद्दों को प्राथमिकता देता है और जनता को शिक्षित करता है।

नागरिक समाज, मीडिया और लोकतंत्र का संबंध- नागरिक समाज, मीडिया और राजनीति के बीच एक मजबूत त्रिकोणीय संबंध स्थापित होता है। नागरिक समाज मुद्दों को सामने लाता है, मीडिया उन्हें amplifies करता है और राजनीति इन मुद्दों के समाधान हेतु नीतियाँ बनाती है। जब सरकार किसी मुद्दे की अनदेखी करती है, तो मीडिया और नागरिक समाज दोनों मिलकर उसे राष्ट्रीय बहस का हिस्सा बना देते हैं। यह संबंध लोकतंत्र की मजबूती के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि नागरिक समाज कमजोर होगा तो जनता की आवाज़ कमजोर पड़ेगी; यदि मीडिया पक्षपाती होगा तो राजनीतिक संवाद बाधित होगा; और यदि राजनीतिक प्रणाली जनमत को अनदेखा करेगी तो लोकतंत्र का नैतिक आधार कमजोर होगा।

वैश्विक और भारतीय संदर्भ में उभरती चुनौतियाँ- वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र अनेक नई चुनौतियों का सामना कर रहा है आर्थिक विषमता, सामाजिक विभाजन, जलवायु संकट और पहचान आधारित संघर्ष लोकतंत्र की वैधता पर प्रभाव डाल रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया पर misinformation लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए गंभीर खतरा बन गई हैं। भारत में लोकतंत्र को कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय राजनीति में सत्ता-संकेन्द्रण, पहचान आधारित राजनीति और लोकलुभावन नीतियाँ लोकतंत्र की स्थिरता पर प्रभाव डाल रही हैं। सरकारी हस्तक्षेप और आर्थिक दबाव मीडिया और नागरिक समाज की स्वतंत्रता को चुनौती दे रहे हैं। इसके अलावा, डेटा मैनिपुलेशन और डिजिटल निगरानी नागरिक स्वतंत्रता के लिए खतरा बन गई हैं।

वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र को कई प्रकार की चुनौतियाँ पेश हैं :

- लोकलुभावन और राष्ट्रवादी राजनीति: कई देशों में नेता केवल तात्कालिक लोकप्रियता और वोट बैंक के लिए निर्णय लेते हैं। इससे दीर्घकालिक नीति स्थिरता प्रभावित होती है।
- सांस्कृतिक और पहचान आधारित संघर्ष: जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय पहचान का राजनीतिकरण लोकतांत्रिक विमर्श को कमजोर करता है और सामाजिक विभाजन को बढ़ाता है।
- डिजिटल misinformation और ट्रोलिंग: सोशल मीडिया पर फैलती झूठी सूचनाएँ लोकतंत्र की पारदर्शिता और चुनावी निष्पक्षता पर गंभीर प्रभाव डाल रही हैं।
- आर्थिक असमानता: वैश्विक आर्थिक विषमता और हाशिए के समुदायों की सीमित भागीदारी राजनीतिक असंतोष और सामाजिक संघर्ष को जन्म देती है।
- पर्यावरणीय और जलवायु संकट: यह सामाजिक स्थिरता और नागरिक अधिकारों को प्रभावित करता है, जिससे नागरिक समाज और मीडिया की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।
- मीडिया का कॉर्पोरेट दबाव
- सेंसरशिप
- लोकतंत्र में असहिष्णुता
- डेटा का दुरुपयोग
- सोशल मीडिया पर नफरत भरी भाषा
- नागरिक समाज संगठनों पर कानूनी प्रतिबंध

इन चुनौतियों के बीच नागरिक समाज और मीडिया लोकतंत्र की मजबूती और स्थायित्व के लिए केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं। उनके माध्यम से जनता अपनी आवाज़ शासन तक पहुँचा रही है, नीति निर्माण में भाग ले रही है और सामाजिक न्याय सुनिश्चित कर रही है।

समाधान और नीतिसुझाव - लोकतंत्र की स्थायित्व और मजबूती के लिए नागरिक समाज और मीडिया का सशक्तिकरण आवश्यक है। सरकारों को नीति निर्माण में नागरिक संगठनों की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए। मीडिया स्वतंत्रता की रक्षा हेतु कानूनी और नीतिगत ढाँचे को मजबूत किया जाना चाहिए। डिजिटल साक्षरता और डेटा पारदर्शिता नागरिक सहभागिता को सशक्त बनाती हैं। विविध स्वामित्व वाले मीडिया प्लेटफॉर्म और स्वतंत्र पत्रकारिता लोकतांत्रिक संवाद को नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। नागरिक समाज और मीडिया का यह सहयोग लोकतंत्र को जीवन्त बनाए रखता है। 21वीं सदी में लोकतंत्र की संरचनाएँ केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रह गई हैं। वैश्वीकरण, आर्थिक अंतर्राष्ट्रीयकरण, तकनीकी प्रगति और डिजिटल मीडिया ने लोकतंत्र को वैश्विक आयाम दे दिए हैं। इस परिदृश्य में नागरिक समाज और मीडिया की भूमिका अब राष्ट्रीय स्तर के अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी निर्णायक बन गई है। वैश्विक राजनीति में राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों, लोकप्रियतावादी (populist) नेताओं और पहचान आधारित आंदोलनों ने लोकतांत्रिक

स्थिरता को चुनौती दी है। संयुक्त राष्ट्र, इंटरनेशनल IDEA और CIVICUS जैसी संस्थाओं की रिपोर्ट्स में स्पष्ट किया गया है कि लोकतंत्र की स्थिरता अब केवल चुनावों तक सीमित नहीं है। इसके लिए पारदर्शी संवाद, डिजिटल साक्षरता, मीडिया स्वतंत्रता और नागरिक सहभागिता अनिवार्य है। विश्वभर में नागरिक संगठनों और मीडिया ने न केवल सरकारी नीतियों पर निगरानी रखी है, बल्कि मानवाधिकार, पर्यावरणीय न्याय, और आर्थिक समानता जैसे मुद्दों को भी वैश्विक विमर्श में स्थान दिया है।

वैश्विक नागरिक समाज और मीडिया की भूमिका- विभिन्न देशों में नागरिक समाज ने लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका और एशिया में नागरिक संगठन मानवाधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में CIVICUS ने हाशिए के समुदायों के लिए सामाजिक न्याय अभियान चलाए हैं, जबकि यूरोप में मीडिया संस्थाएँ सार्वजनिक नीतियों पर सक्रिय निगरानी करती हैं और नागरिकों को वास्तविक और निष्पक्ष जानकारी प्रदान करती हैं। मीडिया वैश्विक स्तर पर सत्ता की निगरानी का कार्य करता है। स्वतंत्र पत्रकारिता और खोजी पत्रकारिता ने कई बार भ्रष्टाचार, पर्यावरणीय क्षति और मानवाधिकार उल्लंघनों को उजागर किया है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने वैश्विक नागरिक अभियानों को नई गति दी है। ऑनलाइन petitions, viral campaigns और डिजिटल आंदोलनों के माध्यम से जनता सीधे अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय नीतिनिर्माताओं तक पहुँच रही है।

वैश्विक नागरिक समाज और मीडिया का आपसी सहयोग लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण में अहम है। मीडिया अभियानों को सार्वजनिक मंच प्रदान करता है जबकि नागरिक संगठन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और न्याय की रक्षा करते हैं। उदाहरण के लिए, यूरोप में जलवायु न्याय अभियान मीडिया के सहयोग से वैश्विक विमर्श में प्रमुख बने हैं। अमेरिका और अफ्रीका में नागरिक संगठन और मीडिया ने मानवाधिकार उल्लंघनों और भ्रष्टाचार के मामलों में कई सुधारों को प्रेरित किया है।

वैश्विक नागरिक समाज और मीडिया के सामने कई चुनौतियाँ हैं:

- डिजिटल प्लेटफॉर्म पर misinformation और साइबर निगरानी
- राजनीतिक हस्तक्षेप और कॉर्पोरेट दबाव
- आर्थिक अस्थिरता और संसाधनों की कमी
- सामाजिक विभाजन और पहचान आधारित संघर्ष

इन चुनौतियों का समाधान केवल सहयोगी नीति निर्माण, पारदर्शिता और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से ही संभव है।

लोकतंत्र की दीर्घकालिक स्थिरता और मजबूती के लिए नागरिक समाज और मीडिया का सशक्तिकरण अनिवार्य है। इसके लिए निम्नलिखित नीतिगत उपाय आवश्यक हैं:

1. नागरिक संगठनों की भागीदारी : नीति निर्माण में नागरिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।
2. मीडिया स्वतंत्रता का संरक्षण: स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया को कानूनी और नीतिगत सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
3. डिजिटल साक्षरता और डेटा पारदर्शिता: नागरिकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म और डेटा के सही उपयोग के लिए सक्षम बनाना चाहिए।
4. वैश्विक सहयोग और ज्ञान साझा करना: विभिन्न देशों के नागरिक समाज और मीडिया के बीच अनुभव और ज्ञान साझा करना लोकतंत्र की स्थिरता में मदद करेगा।
5. सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय सुरक्षा नीति निर्माण में सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

निष्कर्ष- उभरते राजनीतिक मुद्दे एक जीवंत और विकसित होते लोकतंत्र का संकेत हैं। राजनीति का स्वरूप समाज के स्वरूप से निर्धारित होता है और जब समाज बदलता है तो राजनीति को भी अपने ढाँचे और नीतियों को बदलना पड़ता है। नागरिक समाज और मीडिया इस परिवर्तन को समझने और उसे दिशा देने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। नागरिक समाज सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, पारदर्शिता, पर्यावरण संरक्षण और जनहित से जुड़े मुद्दों पर सरकार का ध्यान आकर्षित करता है। वहीं मीडिया इन मुद्दों को जनता के बीच ले जाता है, उनकी गहराई को समझाता है और जनमत तैयार करता है। 21वीं सदी में लोकतंत्र केवल शासन की प्रणाली नहीं, बल्कि नागरिकों, नागरिक समाज और मीडिया के बीच एक जटिल संवाद है। नागरिक समाज और मीडिया लोकतंत्र

की आत्मा हैं, जो सत्ता की निगरानी, नीति निर्माण में भागीदारी और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करते हैं। लोकतंत्र की स्थायित्व केवल चुनावों पर निर्भर नहीं है। इसके लिए पारदर्शिता, सहभागिता, डिजिटल साक्षरता और नागरिक जागरूकता अनिवार्य हैं। स्वतंत्र और सशक्त नागरिक समाज और निष्पक्ष मीडिया ही लोकतंत्र की दीर्घकालिक मजबूती और स्थायित्व का आधार हैं। वैश्विक और भारतीय संदर्भ में यह स्पष्ट है कि नागरिक समाज और मीडिया लोकतंत्र के मुख्य वाहक हैं। इनके माध्यम से ही लोकतंत्र उत्तरदायी, पारदर्शी और समाज-केंद्रित बन सकता है। लोकतंत्र को मजबूत और जीवंत बनाए रखने के लिए इन दोनों की सक्रियता, स्वतंत्रता और पारदर्शिता अत्यंत आवश्यक है। एक जागरूक नागरिक समाज एक जिम्मेदार मीडिया और एक जवाबदेह राजनीतिक प्रणाली मिलकर ही एक सशक्त लोकतांत्रिक भारत का निर्माण कर सकते हैं।

संदर्भ

1. CIVICUS स्टेट ऑफ सिविल सोसाइटी रिपोर्ट 2025, जोहान्सबर्ग, 2025, पृ. 47 |
2. GSC एडवांस्ड रिसर्च एंड रिव्यूज़, मीडिया इंडिपेंडेंस एंड डेमोक्रेटिक अकाउंटैबिलिटी. वॉल्यूम 23 (01). 2025. पृ. 18 |
3. इंटरनेशनल IDEA, ग्लोबल स्टेट ऑफ डेमोक्रेसी : डेमोक्रेसी ऑन द मूव, स्टॉकहोम, 2025, पृ. 61 |
4. द पावर ऑफ मीडिया: स्ट्रेथनिंग डेमोक्रेटिक गवर्नेंस थ्रू सिविल सोसाइटी कोलैबोरेशन, न्यूयॉर्क, 2025, पृ. 22 |